

ग्वालिन क्योँ तू मटकी तू कैसे पे मटकी

ग्वालिन क्योँ तू मटकी तू कैसे पे मटकी,
कहा तू जा रही मटकी मटकी धर मट कांपे मटकी,

तू तो भई मधु मस्त गुजरियाँ चाल चले मस्तानी,
कह दू कोई रोग लगे है कह तू बई बोरानी,
पहले घर तू मटकी फिर बाहर तू मटकी
ग्वालिन क्योँ तू मटकी तू कैसे पे मटकी,

रोज रोज मेरे मार्ग पे चुप नि कस के जावे,
तनक न रही चोखावे मोह को ऐसे ही बहकावे,
उलटी कर दे मटकी वही पे दर दे मटकी,
ग्वालिन क्योँ तू मटकी तू कैसे पे मटकी,

आज अकेली मिल गई तेरा ददगोरास लुटवाऊ,
अफडा तफडी करे तो सबरे ग्वालन को भुलवाऊ,
नहीं न छोडू मटकी तेरी फोडू मटकी,
ग्वालिन क्योँ तू मटकी तू कैसे पे मटकी,

कभू भूल के यह मार्ग पे आइयो मति अकेली,
पागल कहे वनवारे ते नाये ब्रिज रस गुर की देरी,
तेरी पटकी मटकी तेरी चटकी मटकी,
ग्वालिन क्योँ तू मटकी तू कैसे पे मटकी,

स्वर : [बाबा रसिका पागल](#)

<https://alltvads.com/bhajan/lyrics/id/12575/title/gawaalin-kyu-tu-matki-tu-kaise-pe-matki>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |